QUIT INDIA MOVEMENT, 1942

भारत छोड़ो आंदोलन, 1942

अथवा (अगस्त क्रांति)

भारत का गवर्नर जनरल / वायसराय - लार्ड लिनलिथगो

ब्रिटेन का प्रधानमंत्री - विंस्टन चर्चिल

आंदोलन का नेतृत्व - महात्मा गांधी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष - मौलाना अबुल कलाम आजाद

आंदोलन के कारण

- क्रिप्स मिशन की असफलता
- भारत पर जापानी आक्रमण का भय
- द्वितीय विश्व युद्ध के कारण बिगड़ती आर्थिक स्थिति, महंगाई
- ब्रिटिश सरकार द्वारा लोगों में भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति असंतोष/नाराजगी

वर्धा प्रस्ताव - 14 जुलाई, 1942 को कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' स्वीकार किया गया।

भारत छोड़ो प्रस्ताव - 8 अगस्त, 1942 बम्बई के ग्वालिया टैंक में मौलाना अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक, 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित, गांधी ने 'करो या मरो' (Do or Die) का नारा दिया था।

9 अगस्त, 1942 - 9 अगस्त, 1942 के तड़के ही कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार

- आगाखां पैलेस, पूना - गांधी की कैद (9 अगस्त, 1942 से 6 मई, 1944)

नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में दिल्ली, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना इत्यादि शहरों में हड़ताल एवं जुलूस

आंदोलन का प्रारंभ -

बिहार और उत्तर प्रदेश (United Provinces) में विद्रोह का माहौल बन गया। आंदोलन की खबर गाँवों तक फैल गई। 12 अगस्त को पटना सचिवालय पर झंडा फहराने के क्रम में सात विद्यार्थी मारे गए और उनमें करीब 22 आहत हुए। इस घटना की खबर से गया, भागलपुर, सारण, पूर्णिया, शाहाबाद, मुजफ्फरपुर, चंपारण में उपद्रव भड़क उठे। 16 अगस्त तक बिहार की समूची गंगाघाटी तथा संयुक्त प्रांत के ग्रामीण क्षेत्र तक आंदोलन शुरू हो गया। तारापुर गोली कांड (मुंगेर जिले में) 60 क्रांतिकारी शहीद हुए। पुलिस थानों, डाकघरों, कचहरियों, रेलवे स्टेशनों तथा सरकारी सत्ता के दूसरे प्रतीकों पर आंदोलनकारियों ने हमला बोला। सार्वजनिक भवनों पर तिरंगा फहराया गया। रेल की पटरियाँ उखाड़ दिए गए, टेलीफोन-तार के खंभे काट दी गई, पुल उड़ा दिए गए। स्कूल-कॉलेज में सत्याग्रहियों ने बड़े पैमाने पर गिरफ्तारी दी। हड़ताल हो गए, छात्र जुलूस निकालने लगे। अहमदाबाद, बम्बई, जमशेदपुर के कारखानों में मजदूरों ने हड़ताल कर दिए।

जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, अरुणा आसफ अली भूमिगत होकर आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किए। राममनोहर लोहिया कांग्रेस रेडियो के माध्यम से गुप्त रूप से लोगों को नियमित रूप से आंदोलन के समाचार पहुंचाते थे। आज़ाद दस्ता, सिक्रेट दल का गठन

आंदोलन का दमन

कांग्रेस को सरकार ने गैरकानूनी घोषित कर दिया। जुलूसों पर गोलियाँ चलाई गईं। इससे हिंसा में वृद्धि हुई। आंदोलन में हिंसा की जिम्मेदारी सरकार और —

Scanned with CamScanner

उसके दमन की थी। गांधी ने हिंसा के विरोध में — प्रायश्चित स्वरूप 21 दिन का उपवास किए।

आंदोलन की असफलता

कम्युनिस्ट पार्टी और मुस्लिम लीग ने इस आंदोलन का विरोध किया। गांधीजी द्वारा संचालित यह आंदोलन एक महान प्रयास था। लेकिन कई कारणों से आंदोलन असफल हो गया।

(1) आंदोलन शुरू होने के पूर्व ही कांग्रेस के प्रमुख नेताओं के गिरफ्तार कर लिए जाने से आंदोलन असंगठित हो गया था।

(2) गांधी आंदोलन के कार्यक्रम प्रस्तुत न कर सके।

(3) सरकार की असीमित शक्ति तथा सैनिक टुकड़ियों के कारण आंदोलन का निर्ममतापूर्वक दमन किया गया।

महत्व

यद्यपि ब्रिटिश शासकों ने भारत छोड़ो आंदोलन को कुचल दिया लेकिन यह स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश साम्राज्य अब भारत में अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सकता है। इस आंदोलन ने विदेशों में भारत पक्षीय जनमत को प्रबल बनाया। चीन के प्रधानमंत्री च्यांग काई शेक ने अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट को लिखा कि "अंग्रेजों के लिए श्रेष्ठ नीति यह है कि भारत को पूर्ण स्वतंत्रता दे दें।" रूजवेल्ट ने इसका समर्थन किया।

Scanned with CamScanner